DR Krishnadeo Kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email----Kdkbharti08@gmil.com
B.A-Part-1Papet2--
Date---06-07--2020
Mo.No---9234999361.

Gandhian Philosophy is based on Truth and Non-violence Explain.गांधीवादी दर्शन सत्य अहिंसा पर आधारित है, विवेचना करें।

गाँधीवाद में सत्य और अहिंसा एक दूसरे के पूरक हैं।इन दोनों का एक अविभाज्य संबंध है।सत्य क्या है इसके उत्तर में गाँधीजी ने कहा था "यह एक कठिन प्रश्न है, पर स्वयं अपने लिए मैने हल कर लिया है।तुम्हारी अंतरात्मा जो कहती है वही सत्य है।गाँधीवाद में सत्य और अहिंसा को विशेष रूप से महत्व दिया गया है।गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति मे इन दोनों भावनाओं का विकास अनिवार्य रूप से होना चाहिए।इस प्रकार अन्तरात्मा की आवाज को पहचाना ही सत्य है।गाँधीजी के अनुसार सत्य का अन्य अर्थ है, सबके प्रति प्रेम और सेवा द्वारा आध्यात्मिक एकता को प्राप्त करना।सत्य ही ईश्वर है।सत्य का पालन प्रत्येक परिस्थिति में करना चाहिए।परन्तु सत्य को ग्रहण कर उसे व्यक्त करने के लिए अन्तरात्मा को शुद्ध करना भी आवश्यक है।

गाँधीजी अहिंसा पर विशेष बल देते थे। अहिंसा का तात्पर्य शक्ति और दमन के सामने कायरता दिखाना या हाथ पर हाथ रखें बैठना नहीं है।अहिंसा का अभिप्राय सत्याग्रह से है जिसका अर्थ है अन्याय का पूर्ण नैतिक तथा आध्यात्मिक शक्ति से विरोध किया जाय। हाँबहाउस ने अहिंसा की परिभाषा इस प्रकार की है-- "अहिंसा(किसी को हानि न पहुँचना)का अभिप्राय है, असीम प्रेम।यह सबसे बड़ा नियम है।केवल इसी के द्वारा ही मानव जाति को बचाया जा सकता है अहिंसा और सत्य एक दूसरे के अभिन्न हैं और दोनों एक दूसरे की पूर्व कल्पना करते हैं।अहिंसा वीरों का अश्र है।अहिंसा का पालन करने वाला व्यक्ति किसी अंग्रेज को मन, कर्म और वाणी से हानि नहीं पहुँचाना चाहता।

गाँधीजी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे और उनका विचार था कि मनुष्य जन्म से और स्वभाव से अहिंसा प्रेमी होता है।केवल दूषित परिस्थितियों में ही उसे हिंसक बनाती है।मानव समाज का विकास भी यह बताता है कि मनुष्य मूल रूप से अहिंसा प्रेमी है और इस अहिंसक प्रवृति ने ही मानव सभ्यता को विकसित किया है।अहिंसा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए गाँधीजी कहते हैं- "पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के आभाव का नाम है इस प्रकार अहिंसा अपने क्रियात्मक रूप में सभी जीवधारियों के प्रति सदभावना का नाम है।यह तो विशुद्ध प्रेम है।

गाँधीजी के अनुसार अहिंसा के चार स्तर है--

1. किसी भी जीव या प्राणी की हत्या न करना।
2. किसी को शारिरिक कष्ट न पहुँचाना।
3. किसी को मानसिक कष्ट न देना।
4. किसी के प्रति अपने मन में घृणा अथवा द्रोह का भाव न रखना।

गाँधीजी का मत था कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह राजनीतिक हो या सामाजिक अहिंसा के द्वारा सफलता प्राप्त की जा सकती है।उनके शब्दों में-- "अहिंसा रुपी सूर्य के आगे घृणा, क्रोध, ईर्ष्या और दोष रुपी अंधकार भागा चला जाता है, जहाँ प्रेम है वहीं जीवन है, जहाँ घृणा है वहीं बर्बादी है।"गाँधीजी सभी प्रकार के अत्याचार क्रूरता व निर्दयता के धोर शत्रु थे।अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष वे अहिंसात्मक ढंग से करने के पक्ष में थे। उनके अनुसार अहिंसा का मूल सिद्धांत है- "जो तोकू काँटा बूवे ताहि बोव तू फूल।"गाँधीजी का विश्वास था कि अहिंसा के मार्ग पर चलकर अत्याचारी के हदय को बदला जा सकता है।

सत्य की खोज के क्रम में गाँधीजी ने अहिंसा की जिस धारणा को खोज निकाला उसके अर्थ की सम्यक व्यख्या अभीष्ट है।अहिंसा के अपने विचार को स्पष्ट करते हुए एक प्रसंग में गाँधीजी ने लिखा है कि- "हम मोटे तौर से जिसे अहिंसा समझते हैं वहीं मात्र अहिंसा नहीं है।किसी को कभी नहीं मारना यह तो अहिंसा है ही तमाम खराब विचार हिंसा है जल्दबाजी हिंसा है, किसी का बुरा चाहना हिंसा हैं।

इस प्रकार गाँधीजी ने अहिंसा को बहादुरों का हथियार, आत्मबल पर आधारित एक परम श्रेष्ठ मानव धर्म के रूप में चित्रित किया है।अहिंसा एक ओर मनुष्य को साध्य की प्राप्ति के लिए पशुबल की तुलना में संकल्प बल व आत्मबल की प्रयुक्ति के लिए प्रतिबद्ध करती है, वहीं यह भी अहिंसक नैतिकता का अनिवार्य पक्ष है कि मनुष्य किसी भी प्रकार के अन्याय, अनाचार, शोषण अथवा उत्पीड़न का प्राण पण से प्रतिरोध करें।ये सभी गुण अहिंसा से ही व्यक्ति में विकसित हो सकते हैं।

आगे,धन्यवाद।

2020-07-06
From vivo Notes

Scanned with CamScanner